06 / 01 /82 की अव्यक्तवाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संगम युगीन ब्राह्मण जीवन में पवित्रता का सहज अनुभवी बनना

➢➢ पवित्रता के सागर की सन्तान मैं आत्मा...

➢➢ ब्राह्मण जीवन का आधार पवित्रता के गुण पर मनन करती हुई...

➳ _ ➳ पवित्रता मेरे इस ब्राह्मण जीवन का सहज जीयदान है.

→ मेरे इस ब्राह्मण जीवन का श्वास है...

→ श्रेष्ठ श्रृंगार है...

→ सुहाग है...

→ 21 जन्मों की प्रारब्ध का आधार है...

- पवित्र सकंल्प..
- पवित्र दृष्टि...
- पवित्र संबंध...
- सभी कुछ चिर पवित्र...

→ बापदादा को कंबाइंड बनाना अर्थात...

→ सहज पवित्रता के वरदानी बनना...

➳ _ ➳ पवित्रता के सागर को युगल बनाकर मै आत्मा...

➳ _ ➳ पवित्र भव के सहज स्वमान में स्थित होती हुई...

→ पवित्रता का एक दिव्य आभामंडल...

→ अपने चारो ओर महसूस करती हुई,

→ बैठ गई हूँ बापदादा के कमरे में...

→ ये आभामंडल...

→ मुझ आत्मा को अशरीरी बना रहा है...

- मै आत्मा हल्की होती जा रही हूँ...
- देह से डिटैच हो रही हूँ...

➳ _ ➳ देह से डिटैच मैं आत्मा,

➳ _ ➳ सूक्ष्म वतन में, बापदादा के सम्मुख...

→ सारा ही सूक्ष्म वतन आज...

→ पवित्रता के रंग में सरोबार है...

→ श्वेतिमा का साथ-साथ नारंगी आभा लिए हुए...

→ ये पावनता के बादल...

→ और नारंगी रंग के कमल पर...

→ फरिश्ता स्वरूप में विराजमान हैं बापदादा...

→ ठीक वैसे ही कमल पर...

→ मुझ आत्मा को बैठने का इशारा कर रहे हैं...

→ अब मैं फरिश्ता विराजमान हूँ...

→ बापदादा की नजरों के ठीक सामने...

- बापदादा की नजरो से बहता पवित्रता का सैलाब,
- मैं आत्मा स्वयं में समाँ रही हूँ ..
- मेरे सिर के ठीक ऊपर...
- बादलों से बरसता पवित्रता का स्वर्णिम प्रकाश...
- मैं आत्मा पूरी तरह भी भीग रही हूँ...
- ये प्रकाश मेरे रोम- रोम में समां रहा है...

→ मेरे संकल्प, मेरी दृष्टि, मेरे कर्म...

→ सभी पवित्र होते जा रहे है...

➳ _ ➳ बापदादा की भृकुटि से निकलता ओरेंज रंग का तेज प्रकाश...

➳ _ ➳ मुझ फरिश्ते में समाता जा रहा है...

→ अब मैं आत्मा निराकार रूप में उड चली परमधाम की ओर...

→ शिवसागर की किरणों के बीच...

→ अपने अनादि स्वरूप का गहराई से अनुभव करती हुईं...

- कोहिनूर हीरे के समान...
- जगमगाता हुआ...

→ परमधाम में बहते इस पवित्रता के सैलाब में...

→ डुबकियां लगाता हुआ...

- मेरी अखुट पावनता...

→ शांति के इस धाम में, मै आत्मा...

→ महसूस कर रही हूँ पावनता की खुशबू को...

- मेरी महकती पावनता...
- मुझ आत्मा का अपना निजी संस्कार...
- देर तक इस खूशबू को खुद में भरती हुई मैं आत्मा..
- दिव्य गुणों के बिखरे ये हीरक कण...

→ एक एक कर मुझ डायमंड में समाते जा रहे हैं...

➳ _ ➳ अपनी अनादि आदि पवित्रता से विभूषित मैं आत्मा...

➳ _ ➳ अब लौट चली हूँ वापस, अपनी स्थूल देह की ओर...

→ अनुभवी मूर्त मै आत्मा...,

→ मेरे नयनों में पावनता की झलक है...

→ मेरे कर्म में मेरे सबंध में पवित्रता की फलक है..

- मेरी दृष्टि रुहानी है...
- मेरी वृत्तिभाई भाई की है...
- मेरी कृति बाप समान है...
- मैं परम पवित्र आत्मा हूँ...